शैलपुत्री माता की कथा

https://justprofessionals.net

शैलपुत्री माता की व्रत कथा

एक बार की बात है जब महाराज प्रजापति हिमालय ने यज्ञ किया था तो इसमें उन्होंने सभी देवताओ को आमंत्रित किया था, लेकिन भगवान भोलेनाथ को आमंत्रित नही किया था, परंतु देवी सती उस यज्ञ मे जाने के लिए ज़िद करने लगी और भोलेनाथ जी को भी जाने के लिए बोलने लगी, लेकिन भगवान भोलेनाथ नाथ ने देवी सती से कहा कि सभी देवताओ को आमंत्रित किया गया है, हमें नही, ऐसे में वहाँ जाना ठीक नहीं हैं

देवी सती अपने पति का यह अपमान सहन नही कर सकीं और योगाग्नि मे स्वय को जलाकर भस्म कर लिया| इस दुख से ग्रस्त होकर भगवान भोलेनाथ जी ने उस यज्ञ का विध्वंस करा दिया| यही सती देवी अगले जन्म मे शेलराज हिमालय की पुत्री के रूप मे जन्मी जिस कारण ये देवी माता शैलपुत्री कहलाई

माता शैलपुत्री पूजा मंत्र

वन्दे वांच्छितलाभाय चंद्रार्धकृतशेखराम् ।

वृषारूढ़ां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ॥

नवदुर्गा पूजा संकल्प मंत्र

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्राह्मणो वयसः परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे, अमुकनामसम्वत्सरे

आश्विनशुक्लप्रतिपदे अमुकवासरे प्रारभमाणे नवरात्रपर्वणि एतासु नवतिथिषु

अखिलपापक्षयपूर्वक-श्रुति-स्मृत्युक्त-पुण्यसमवेत-सर्वसुखोपलब्धये संयमादिनियमान् दृढ़ं पालयन् अमुकगोत्रः

अमुकनामाहं भगवत्याः दुर्गायाः प्रसादाय व्रतं विधास्ये।

माँ शैलपुत्री की आरती

शैलपुत्री माँ बैल असवार।करें देवता जय जय कार॥

शिव-शंकर की प्रिय भवानी।तेरी महिमा किसी ने न जानी॥

पार्वती तू उमा कहलावें।जो तुझे सुमिरे सो सुख पावें॥

रिद्धि सिद्धि परवान करें तू।दया करें धनवान करें तू॥

सोमवार को शिव संग प्यारी।आरती जिसने तेरी उतारी॥

उसकी सगरी आस पुजा दो।सगरे दुःख तकलीफ मिटा दो॥

घी का सुन्दर दीप जला के।गोला गरी का भोग लगा के॥

श्रद्धा भाव से मन्त्र जपायें।प्रेम सहित फिर शीश झुकायें॥

जय गिरराज किशोरी अम्बे।शिव मुख चन्द्र चकोरी अम्बे॥

मनोकामना पूर्ण कर दो।चमन सदा सुख सम्पत्ति भर दो॥

इति समाप्ति

https://justprofessionals.net